प्रश्न :1 निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए :-

i. उच्चारण दोष के कारण एवं निराकरण के उपाय :-

भाषा में उच्चारण दोषों के अनेक कारण होते है, यहाँ पर कुछ प्रमुख कारणों का उल्लेख किया जा सकता है।

i. भौगोलिक प्रभाव :- भाषा के उच्चारण में स्थानीय भौगोलिक प्रभाव होता है। पहाड़ी क्षेत्र के लोगों का उच्चारण मैदानी क्षेत्रों के उच्चारण से बिल्कुल ही भिन्न होता है।

ii. अशुद्ध उच्चारण :- यदि शिक्षक का उच्चारण अशुद्ध होता तो बालक का उच्चारण भी अशुद्ध होगा क्योंकि बालक उनका अनुकरण करते है और वे भी अशुद्ध उच्चारण करना सीखते हैं।

iii. शारीरिक दोष :- जिन बालकों मे कोई भी शारिरीक दोष होता है वे भी इस दोष से ग्रसित होते है। बालक के वाचन के दोष या उसकी अनभिज्ञता भी अशुद्ध उच्चारण का कारण होती है।

iv. हीन भावना :- जो बालक किसी कारण वश हीन भावना के शिकार होते है, वे भी शुद्ध उच्चारण नहीं कर पाते हैं।

v. भय :- कई बालक कठोर बालक कठोर वातावरण के कारण भयभीत रहते है। भय के कारण बालक शब्दो का शुद्ध उच्चारण नही करते।

उच्चारण दोषों का निराकरण

जब बालक परिवार से बाहर निकल कर वातावरण के साथ सम्पर्क स्थापित करता है एवं विद्यालय मे प्रवेश लेता है तो उसके वार्तालाप करने पर अध्यापक को यह ज्ञात हो जाता है कि कौन सा बालक उच्चारण संबंधी कौन सी त्रुटि करता है। अध्यापक इन नियमों का प्रयोग कर सकता है–

(1) ध्वनि तत्व का ज्ञान करना :– बालक में जब भाषा का ज्ञान हो जाए और वह लिखने का कार्य आरंभ करे तब बालक को हिन्दी भाषा के ध्वनि तत्व का पूरा ज्ञान कराना चाहिए। प्रत्येक ध्वनि के लिए अलग-अलग वर्ण निश्चित है अतः बच्चों को ध्वनियों का विस्तृत एवं स्पष्ट ज्ञान कराना चाहिए।

i हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण सिखाना :– ध्वनि तत्व का प्रारंभिक ज्ञान कराने के पश्चात हिंदी ध्वनियों का वर्गीकरण समझना चाहिए। उच्चारण की प्रकृति उच्चारण, बोध, प्रयत्न एवं आभ्यंतर प्रयत्न के आधार पर ध्वनियों का अलग-अलग ढंग से वर्गीकरण सिखाना चाहिए, जिससे बच्चे घोष-अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, श्वास नाद, ह्रस्व-दीर्घ, अनुस्वार-अनुनासिक, संवृत-विवृत आदि ध्वनियों का अंतर समझ जाए।

ii हिंदी की विशेष ध्वनियों का आभास कराना :– हिंदी भाषा मे कुछ ध्वनियाँ ऐसी है जिसमें सूक्ष्म अंतर है। इस अंतर का स्पष्ट ज्ञान बच्चों मे कुछ ध्वनियाँ ऐसी है जिनमे बच्चो का करना चाहिए, जैसे– न और ण

और ब, स, श और ष, ड ढ़ और ड़, ढ़ आदि। इन ध्वनियों के बारे में बच्चों के उच्चारण करने का ढंग विधिवत रूप से स्पष्ट कराना चाहिए। जैसे— व के उच्चारण में निचला होंठ दाँतों का स्पर्श करता है तो दोनों होठों के स्पर्श से 'ब' ध्वनि उच्चारित होती है।

(2) ध्वनि तत्व का ज्ञान कराना :- यदि हमें समय पर पता चल जाए कि बालक के उच्चारण अंग में दोष है तो उसे शीघ्र ही डॉक्टर के पास ले जाकर उसकी चिकित्सा करवानी चाहिए।

(3) मित्रमण्डली :- भाषा अनुकरण द्वारा सीखी जाती है। और अपने साथ रहने वाले व्यक्तियों के उच्चारण का बालक पर बहुत प्रभाव पड़ता है। अतः यह प्रयास करना चाहिए कि बालक ऐसे लोगों के साथ रहे जो शुद्ध उच्चारण करें।

(4) अध्यापक का उच्चारण :- कक्षा में अध्यापक के बोलने का पूरा प्रभाव बालक पर पड़ता है। उसका वाचन, अभियोग्यता आदि बालकों के द्वारा ध्यानपूर्वक सुने जाते हैं अतः अध्यापक को अपने उच्चारण पर बहुत ध्यान देना चाहिए।

(5) सन्तुलित व्यवहार :- बालक के प्रति किए गए असंयमित व्यवहार बालक में डर की भावना पैदा करता है। कई बार बालक भय संकोच के कारण अशुद्ध उच्चारण करता है।

Scanned with CamScanner

(ii) दृश्य-श्रव्य (सहायक) साधनों का महत्व

शिक्षण में दृश्य-श्रव्य सामग्री का महत्व या आवश्यकता निम्नलिखित है—

(1) इन्द्रिय अनुभवों की प्राप्ति :— अधिगम के लिए यह आवश्यक है कि बालकों को पर्याप्त इन्द्रियानुभव प्राप्त हो सके। छोटे बालकों का प्रत्यक्ष अनुभवों की विशेष आवश्यकता है क्योंकि ज्ञानेन्द्रियाँ, सीखने के लिए प्रवेश-द्वार मानी जाती हैं।

(2) प्रत्यक्ष अनुभवों का स्थान ग्रहण करना :— भूतकाल या दूरवर्ती प्रदेशों का अध्ययन कराते समय हो सकता है कि अपने विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष अनुभव देना सम्भव न हो। ऐसे समय पर नई अवधारणाओं, नए तथ्यों, नए चिन्हों को समझने के लिए दृश्य-श्रव्य साधन उनकी सहायता कर सकते हैं।

(3) प्रत्यक्ष अनुभवों के पूरक रूप से :— दृश्य-श्रव्य साधन ज्ञान-प्राप्ति की दिशा में प्रत्यक्ष अनुभवों के पूरक भी सिद्ध हो सकते हैं। बालक को प्रत्यक्ष अनुभव के पश्चात इनसे संबंधित कोई फिल्म या चलचित्र दिखाया जा सकता है।

(4) पिछड़े बालकों की सहायता :— दृश्य-श्रव्य साधन पिछड़े बालकों के लिए बड़े सहायक होते हैं। ऐसे बच्चे पाठ्य पुस्तक से सारी आवश्यक बातें सामान्यतः ग्रहण नहीं कर सकते हैं। अतः ऐसे बालक दृश्य-श्रव्य सामग्री आदि की

Scanned with CamScanner

सहायता से नई बातों को सरलतापूर्वक सीख व ग्रहण कर सकते हैं।

(5) शिक्षण को प्रभावपूर्ण बनाने में सहायक :- दृश्य श्रव्य सामग्री की सहायता से शिक्षण प्रभावशाली होता है और शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति काफी हद तक संभव होती है।

(6) भाषागत दोषों एवं भ्रमों का निवारण करने हेतु उपयोगी :- दृश्य-श्रव्य सामग्री की सहायता से विषय-वस्तु को रोचक बनाया जा सकता है। साथ ही उनके भ्रमों का निवारण भी इनकी सहायता से किया जाता है।

(7) विषय-वस्तु को रोचक एवं आकर्षक बनाने में उपयोगी :- विद्यार्थियों को नवीन विषय-वस्तु का ज्ञान प्रदान करने के लिए उसे रोचक एवं आकर्षक बनाने हेतु श्रव्य सामग्री की आवश्यकता होती है। इससे गंभीर एवं कठिन विषय को विद्यार्थी आसानी से समझ लेते हैं।

इसके अतिरिक्त यथार्थ दृश्य-श्रव्य सामग्री के प्रयोग से बालकों को मानव की सामान्य क्रियाओं तथा आवश्यकताओं का पता चलता है।

Scanned with CamScanner

नाटक की शिक्षण - प्रणाली

(iii) प्राचीन काल से ही भारत मे नाटक लिखे जा रहे है। नाटक साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है। भारतीय साहित्य में नाटक लिखने की कला एक प्राचीन काल से ही विकसित है। यहाँ अट्ठारह प्रकार के रूपक लिखे जाते थे उनमे से एक नाटक भी था किंतु वर्तमान मे नाटक ने सभी रूपकों को अपने में समाहित कर लिया है। इसलिए सभी रूपकों का संयुक्त एक नाम नाटक पड़ गया।

संस्कृत साहित्य के आचार्य नाटक शिक्षण को काव्य मानते है। उन्होने इन्द्रियों को प्रभावित करने के आधार पर काव्य के दो भेद किए है।

(1) श्रव्य काव्य एवं
(2) दृश्य काव्य।

नाटक दृश्य काव्य है तथा इस कौशल का विकास करने मे बहुत अधिक सहायक भी है। नाटक की भाषा मे जो अभाव रह जाता है वह अभिनय के द्वारा पूरा कर दिया जाता है। वस्तुतः नाटक को अभिनय के माध्यम से प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। इस कौशल के विकास के लिए बच्चों को नाटक करने हेतू प्रेरित किया जाता है। नाटक जन साधारण की वस्तु है, इसमे लोकहित और लोक रंजन की भावना अधिक होती है।

Scanned with CamScanner

नाटक में सभी पात्र, उसका कथोपकथन, उसके दृश्य, उसमे वर्णित घटना आदि को रंगमंच पर प्रस्तुत करते हैं।

नाटक शिक्षण मे ध्यान रखने योग्य बातें :-

1. शिक्षक को नाटक प्रारंभ करने से पूर्व नाटककार का परिचय छात्रों को दे देना चाहिए।
2. संवाद बोलने में अस्वाभाविकता नहीं आने देना चाहिए अन्यथा नाटक का मर्म ही समाप्त हो जाएगा।
3. गद्य के मध्य आए कठिन अंशो को पढ़ाने के लिए शिक्षण-पद्धति का सहारा लेना चाहिए।
4. नाटक के पात्रों अथवा चरित्रो की स्पष्ट रूपरेखा खींचनी चाहिए।
5. नाटक पढ़ाने से पूर्व शिक्षक को पूरी कहानी नहीं बतानी चाहिए इससे छात्रों की रुचि समाप्त हो जाती है।
6. छात्रों मे कितना ज्ञान अर्जित किया है इसके लिए बालको से प्रश्न पूछते रहना चाहिए।
7. नाटक शिक्षण के प्रारम्भ मे नाटक की पृष्ठभूमि व आवश्यक को स्पष्ट कर देना चाहिए।

हिन्दी अध्यापक के गुण एवं कर्तव्य

(iv) एक अध्यापक अपने छात्रों तथा उनके अभिभावकों का आदर एवं विश्वास प्राप्त करता है। वह अपने व्यक्तिगत उदाहरण तथा प्रभाव से उद्यम, ईमानदारी, धैर्य, शुद्धता तथा सहयोग का विकास करता है।

हिन्दी अध्यापक के गुण

- व्यक्ति संबंधी गुण
  - मानव गुण
  - रचनात्मक विचार धारा
  - शिक्षण विधियों मे निपुणता
  - अच्छा नागरिक
  - मधुर सम्बन्ध
  - धैर्य तथा आत्म संयम
  - सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार
  - ईमानदारी
  - व्यवसाय के प्रति निष्ठा
  - सम-सामयिक घटनाओ का ज्ञान
- व्यावसायिक गुण
  - उत्तेजना
  - विषय का ज्ञाता
  - व्यावसायिक प्रशिक्षण
  - निरंतर अध्ययनशीलता
  - मधुर संबंध
  - प्रशासकीय योग्यता

Scanned with CamScanner

1 व्यक्ति सम्बन्धी गुण :-

1. मानव गुण :- एक अध्यापक को अच्छा अध्यापक बनने से पहले अच्छा मानव बनना अति आवश्यक है। उसके अंदर ज्ञान कूट-कूटकर भरा होना चाहिए।
2. रचनात्मक विचार धारा :- हिंदी के अध्यापक में जीवन के प्रति रचनात्मक दृष्टिकोण होना चाहिए। यदि नए विचार उत्तम है तो उन्हे ग्रहण करने के लिए वह हमेशा तत्पर रहना चाहिए।
3. शिक्षण विधियों मे निपुण :- हिंदी ऐसा विषय नहीं है जो केवल बच्चों को ज्ञान प्रदान करता है। यह बच्चों मे उचित कौशल और दृष्टिकोण भी उत्पन्न कराता छात्रों मे रुचियाँ जागृत कर सकता है।
4. अच्छा नागरिक :- हिंदी का अध्यापक समस्त समुदाय के प्रति एक विशेष उत्तरदायित्व रखता है। वह सार्वजनिक कार्यों मे ज्ञान और नेतृत्व प्रदान करता है।

2 व्यावसायिक गुण :-

1. विषय का ज्ञाता :- हिंदी शिक्षक को हिंदी की विभिन्न विधाओं से परिचित होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

(2) निरन्तर अध्ययनशीलता :- हिन्दी एक प्रगतिशील विषय है और शिक्षण निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।

(3) मधुर सम्बन्ध :- हिन्दी के अध्यापक को अपने विद्यार्थियों के साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्ध होना अनिवार्य है।

★ हिन्दी अध्यापक के कर्तव्य :-

(1) अधिगम हेतु छात्रों को प्रेरित करना।

(2) अधिगम हेतु कक्षा-कक्ष में उपयुक्त वातावरण उत्पन्न करना।

(3) छात्रों मे सृजनात्मकता का विकास करना।

(4) कक्षा-कक्ष मे प्रस्तुतिकरण की अपेक्षा बालकों की क्रियाशीलता पर बल देना।

(5) आवश्यकता एवं रूचि के अनुसार छात्रों को गृहकार्य देना उसका निष्पक्ष रूप से अंकन करना और लौटने मे शीघ्रता करना।

(6) शिक्षण मे व्यक्तिगत विभिन्नता का ध्यान रखना।

(7) शिक्षण उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विश्वसनीय, वैध एवं वस्तुनिष्ट मूल्यांकन विधियों का प्रयोग करना।

(8) शिक्षण को रूचिकर और प्रभावी बनाने के लिए उपयुक्त, स्तरानुकूल और प्रभावी शिक्षण विधियों का प्रयोग करना।

(9) भाषा प्रयोगशाला की व्यवस्था करना और विद्यार्थियों को उससे अधिकाधिक लाभान्वित करना।

Scanned with CamScanner

Unit 1

प्रश्न : 2 मौखिक -अभिव्यक्ति कौशल - शिक्षण का अर्थ बताते हुए बालकों मे इसके विकास के लिए कौन सी तकनीक अपनायेंगे ?

मौखिक अभिव्यक्ति का अर्थ :- मौखिक अभिव्यक्ति ही 'बोलना' है। मौखिक अभि-व्यक्ति मे मानव अपने विचार, भाव तथा उद्‌गार को प्रकट करता है। जब व्यक्ति ध्वनियों के माध्यम से, मुख के अवयवों की सहायता से उच्चारित भाषा का प्रयोग करते हुए अपने विचारों को प्रकट करता है तब उसे मौखिक अभिव्यक्ति कहा जाता है। अतः यह कहा जा सकता है कि मुख से व्यक्त होने वाली भाषा मौखिक अभिव्यक्ति अथवा मौखिक भाषा है और मुख के अवयवों के माध्यम से भावों व विचारों की अभिव्यक्ति मौखिक अभिव्यक्ति है।

किटसन के अनुसार, — "किसी भाषा को पढ़ने और लिखने की अपेक्षा बोलना व सीखना सबसे छोटी छोटी पगडंडी को पार करना है।"

Scanned with CamScanner

प्रसिद्ध लेखक बाईकेन के अनुसार, — "सम्भाषण की कला मे प्रवीण व्यक्ति ही तत्पर बुद्धि वाला व्यक्ति बन सकता है अर्थात् वह व्यक्ति जिसकी वाणी प्रभावशाली नहीं है और जो युक्तिपूर्वक अपने विचारों को व्यस्त नहीं कर सकता वह व्यक्ति बहुत बड़ा विद्वान होते हुए भी श्रोता समुदाय में उपहास का पात्र बनेगा।"

टॉमकिन्सन का कथन इस बात को सार्थक सिद्ध करता है, — "सम्भाषण की असफलता विश्रृंखलित विचारों का परिणाम है, असफल श्रोता ही असफल वक्ता होता है।" अतः व्यक्ति जिस प्रकार का श्रोता है वैसा ही वक्ता भी होता है।"

बालकों मे इसके विकास के तकनीक विधियाँ

मौखिक रचना की कला में निपुण होने पर सभी छात्र लिखित रचना मे कुशलता प्राप्त कर लेते हैं। मौखिक अभिव्यक्ति का उद्देश्य छात्रों की झिझक मिटाकर उनमें सरल, स्वाधिकार तथा मधुर व्याख्यान देने की योग्यता उत्पन्न करना है। छात्रों की अभिव्यक्ति मे शुद्धता, सरलता, स्पष्टता, मधुरता, सुबोधता, स्वाभाविकता, शिष्टता तथा प्रवाहिकता आ जाए इसके लिए शिक्षक को निम्नलिखित विधि व सामग्री का प्रयोग करना चाहिए।

(1) **प्रश्नोत्तर** :- प्रश्नोत्तर मौखिक शिक्षा देने की उत्तम विधि है। किसी विषय अथवा पाठ्यपुस्तक को पढ़ाते समय बीच-बीच में प्रश्न पूछने चाहिए। छात्रों से शुद्ध व स्पष्ट भाषा के पूर्ण वाक्यों मे उत्तर स्वीकार करने चाहिए। अशुद्ध उत्तरो को छात्रों द्वारा ही शुद्ध कराया जाना चाहिए।

(2) **वार्तालाप** :- मौखिक कार्य के लिए बालक के विचारों की द्योतक भाषा को स्पष्ट एवं क्रमबद्ध रखने की आवश्यकता होती है। प्रारंभ मे बालकों का पारस्परिक वार्तालाप एवं शिक्षक तथा कक्षा से वार्तालाप होना चाहिए। प्रत्येक छात्र को वार्तालाप के लिए प्रेरित करना चाहिए। वार्तालाप मे छात्रों से प्रश्न पूछकर उनसे उत्तर निकलवाने चाहिए।

(3) **सस्वर वाचन** :- पाठ्यपुस्तक पढ़ाते समय सर्वप्रथम शिक्षक को प्रस्तुत अनुच्छेद का वाचना करना चाहिए तथा फिर बालकों से सस्वर वाचन कराना चाहिए। सस्वर वाचन प्रभावोत्पादक होना चाहिए ताकि श्रोतागण प्रभावित हो सकें। सस्वर वाचन मे स्पष्ट तथा शुद्ध रीति से उच्चारित करना, स्पष्ट शब्दोच्चारण, प्रत्येक ध्वनि को मधुरता के साथ निकालना, प्रत्येक शब्द का अन्य शब्दो से अलग कर उचित बल व विराम चिन्ह के साथ पढ़ना आदि आते हैं।

Scanned with CamScanner

(4) वाद - विवाद :- वाद - विवाद प्रतियोगिता मौखिक भाव प्रकाशन का उतम साधन है। वाद - विवाद मे बालक पूर्व निर्धारित विषय पर विचार विनियम करते है। इसमें बालक कक्षा के समस्त छात्रों के सम्मुख विषय के पक्ष तथा विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत करते है। इसमे भाग लेने वाले सभी छात्र बड़े ओज तथा उत्साह से बोलना सीख जाते है।

(5) भाषण :- भाषण का विषय पूर्वनिर्धारित कर दिया जाता है। इस विषय पर शिक्षक द्वारा छात्रों को भाषण करने का अवसर प्रदान किया जाता है। भाषण का विषय छात्रों करते है तथा बड़ी प्रसन्नता से बोलते है। आवश्यकतानुसार बालको को उचित मार्ग दर्शन भी करना चाहिए।

(6) चित्र वर्णन :- बालक चित्र देखने में बड़ी रुचि रखते है। वह चित्रों से आकर्षित होता है उन्हे बनाना चाहता है, तथा चित्रों को देखकर कुछ बोलना भी चाहते है। मौखिक अभिव्यक्ति के लिए बालकों से वर्णन करवाया जाए तथा चित्रों पर आधारित प्रश्नो के उतर पूछे जाए। चित्रों द्वारा बालको से मौखिक कहानी सुनी जाए। चित्र कक्षा के स्तर के अनुकूल होने चाहिए।

Scanned with CamScanner

(7) कहानी सुनाना व सुनना :- छोटे बच्चे कहानी सुनना बहुत पसंद करते हैं। प्रारम्भ में बच्चों को परियों की कहानी, जानवरों की कहानी तथा किसी घटना की कहानी सुनानी चाहिए। अध्यापक को पहले स्वयं कहानी सुनानी चाहिए। उसके पश्चात बालकों से कहानी सुननी चाहिए। इससे श्रवण कौशल तथा मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का विकास होगा।

(8) कविता पाठ :- बालकों की संगीत व कविता मे स्वाभाविक अभिरुचि होगी। छोटी कक्षा मे बच्चे की अवस्था के अनुकूल छोटे-छोटे गीतो का समावेश करना चाहिए। पहले बालकों से सामूहिक गान कराया जाये। बाद मे व्यक्तिगत गान के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

उदाहरणार्थ —

(1) दादी चरखा कात रही है,
मीनू बुनती स्वेटर।
सोनू जोनू उद्यम करते,
मम्मी लिखती लैटर।

(2) डॉली की गुड़िया की शादी,
गीत खुशी के गाओ।

लड्डू बर्फी, दही, मुंगौड़े,
जमकर खूब उड़ाओ।।

(9) सत्संग :- सत्संग के द्वारा बालक अच्छी-अच्छी बातें सीखता है। सत्संग का बालक की मौखिक अभिव्यक्ति पर बहुत प्रभाव पड़ता है। सामान्यत: बालक जैसे वातावरण में रहेगा, उस पर उस वातावरण का तथा भाव अभिव्यक्ति का वैसा ही प्रभाव भी पड़ेगा।

(10) नाटक :- नाटक द्वारा भावव्यक्ति का अच्छा अभ्यास हो जाता है। रंगशाला मे बालक को आंगिक वाचिक एवं भावों के अभिनय की दीक्षा सफलतापूर्वक मिल सकती है।

(11) घटना वर्णन :- घटना वर्णन के माध्यम से छात्रों मे मौखिक कौशल का विकास किया जा सकता है। इसके अन्तर्गत छात्रों को एक घटना दी जाती है जिसका छात्र अपने स्वरानुसार वर्णन करते है। इसके अतिरिक्त जीवन के प्रत्येक पल के घटनाएँ घटित होती रहती है। सामाचार-पत्रों मे भी अनेक घटनाओं का वर्णन होता है। इसके साथ-साथ अन्य व्यक्तियों और महापुरूषों के जीवन की घटनाओं तथा प्रेरक प्रसंगो को कक्षा मे सुनाया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

(12) **समाचार वाचन** :- कक्षा स्तर पर और विद्यालय स्तर पर समाचार वाचन की गतिविधि नियमित रूप से आयोजित की जाती है। समाचार - पत्रों, रेडियो और दूरदर्शन से समाचार संकलित करके विद्यालय की प्रातःकालीन सभा में समाचार वाचन किए जाते हैं। इसके लिए दूरदर्शन और रेडियो से प्रसारित होने वाले समाचारों को ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए।
उनके मौखिक उच्चारण एवं धाराप्रवाह वाचन मे आने वाले तान - अनुतान पर ध्यान देना चाहिए। समाचार वाचन के समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान रखना चाहिए -

I भाषा पर पूर्ण अधिकार,
II अर्थ - बोध और स्पष्ट एवं शुद्ध उच्चारण,
III तथ्यों के अनुसार भाव - प्रवणता, उतार चढाव, बलाघात एवं लय,
IV आत्मीयता तथा
V आत्मविश्वास

(13) **टेलीफोन वार्ता** :- छात्रों में मौखिक अभिव्यक्ति विकसित करने के लिए टेलीफोन पर बातचीत का सहारा लिया जा सकता है। कभी-कभी छात्र सबके समक्ष बोलने में हिचकाते हैं। तो उनमे आत्मविश्वास जाग्रत करने के लिए टेलीफोन की सहायता ली जा सकती है।

Scanned with CamScanner

Unit II

प्रश्न :- 3 इकाई - योजना से आपका क्या अभिप्राय है? इकाई योजना एवं दैनिक पाठ - योजना मे अंतर बताते हुए किसी एक दैनिक पाठ - योजना का निर्माण कीजिए।

इकाई योजना का अर्थ :-

इकाई योजना की संकल्पना का श्रेय हरबर्ट महोदय को जाता है। हिन्दी मे इकाई का सम्बन्ध भाषा की विषय - वस्तु के प्रस्तुतीकरण के विभिन्न माध्यमो एवं साधनों से होता है। इकाई योजना मे हिंदी शिक्षण की विषय - वस्तु तथा शिक्षण विधि दोनों ही सम्मिलित होती है। इसमे भौतिक की सम्पूर्ण विषय - वस्तु को छोटी - छोटी इकाइयों मे विभाजित कर दिया जाता है। इसकी सहायता से हिंदी शिक्षण प्रक्रिया को व्यावहारिक रूप प्रदान किया जाता है। हिंदी मे विभिन्न इकाइयो का विभाजन बालक के सिखने के क्रम के किया जाता है। इकाई योजना का स्वरूप हिंदी विषय वस्तु कि प्रकृति तथा शिक्षण उद्देश्यों पर निर्भर करता है। इकाई योजना के आधार पर ही दैनिक शिक्षण पाठ - योजना का निर्माण किया जाता है। इस प्रकार इकाई योजना बनाने पर हिंदी शिक्षक को हिंदी की विषय वस्तु तथा उसके लिए आवश्यक सामग्री की जानकारी पूर्व में ही हो जाती है।

Scanned with CamScanner

सामान्य अर्थ मे, — "इकाई योजना एक आधारभूत पाठ्य-क्रम संरचना प्रदान करती है जिसके द्वारा विशिष्ट कक्षा गतिविधियाँ संचालित की जा सकती है।"

"इकाई योजना व्यावहारिक परिणामों पर जोर देने के लिए अधिगम अनुभवों से अधिक अर्थपूर्ण परिणाम प्राप्त करने के लिए इंगित करती है।"

रिस्क के अनुसार, — "इकाई किसी समस्या या योजना से सम्बधित सीखने वाली क्रियाओं की समानता या एकता को बनाती है"।

एन. एल. बॉसिंग के अनुसार, — "इकाई अर्थपूर्ण परस्पर संबंधित क्रियाओं की वह व्यापक श्रृंखला है जो विकसित होकर बालकों की अधिगम उद्देश्यों की पूर्ति करती है। जिससे बालक महत्वपूर्ण शैक्षिक अनुभव प्राप्त कर सके और अपने व्यवहार मे अपेक्षित परिवर्तन ला सके।"

इकाई शिक्षण सम्बधित संकल्पनाओं का एक समूह है जिसे अनुदेशात्मक तथा शैक्षणिक अनुभवों द्वारा निर्धारित किया जाता है"।

Scanned with CamScanner

इकाई योजना व दैनिक पाठ योजना में अंतर

इकाई पाठ योजना व दैनिक पाठ योजना में निम्नलिखित अंतर है-

(1) दैनिक पाठयोजना विषय-वस्तु का एक अंश होती है जबकि इकाई पाठ योजना विषय-वस्तु का सम्पूर्ण रूप होती है।

(2) दैनिक पाठ-योजना में सोपानो के क्रियान्वयन का उल्लेख होता है जबकि इकाई पाठ-योजना में विषय-वस्तु व भाषा तत्वों का उल्लेख करते है। सोपानों का मात्र उल्लेख कर दिया जाता है।

(3) लिखित व मौखिक गृहकार्य के प्रश्न दैनिक पाठ-योजना मे दिए जाते है जबकि इकाई पाठ योजना मे केवल गृहकार्य का स्वरूप लिख दिया जाता है।

(4) दैनिक पाठ-योजना मे केवल एक-एक उद्देश्य को व्यवहारगत परिवर्तन सहित लिखते है। जबकि इकाई पाठ योजना के उद्देश्यों को समस्त रूप से क्रमवार लिखते है।

(5) दैनिक पाठ-योजना मे प्रतिदिन के दैनिक पाठ का मूल्यांकन प्रतिदिन होता है, जबकि इकाई-योजना मे मूल्यांकन सभी दैनिक पाठों का होता है।

(6) दैनिक पाठ-योजना का स्वरूप विस्तृत होता है, वह भी सूक्ष्म बिन्दुओं पर आधारित होता है, जबकि इकाई पाठ योजना

Scanned with CamScanner

देखने मे लघु होती है. किंतु उसमे सम्पूर्णता होती है।

(7) दैनिक पाठ-योजना दैनिक शिक्षण हेतू बनाई जाती है, जिसमे एक दिन मे पढ़ाए जाने वाले पाठ का उल्लेख किया जाता है जबकि इकाई पाठ योजना किसी एक भी पूर्ण इकाई को लेकर तैयार की गई योजना होती है।

(8) दैनिक पाठ योजना मे शिक्षण विधियों को शिक्षण करने की प्रक्रिया के अनुसार लिखते है जबकि शिक्षण विधियों का उल्लेख पूर्णरूप से इकाई योजना मे किया जाता है।

दैनिक पाठ योजना का निर्माण

विद्यालय	दिनांक	कक्षा	वर्ग
सर्वोदय कन्या विद्यालय	31.8.2020	1	'अ'
कलांश	अवधि	विषय	प्रकरण
1	35 मिनट	हिंदी	'मेरा देश'

क्रम संख्या	पाठ्यपुस्तक के मुख्य बिन्दु	कलांश संख्या एवं प्रकरण	चयनित शिक्षण विधी	शिक्षण सहायक सामग्री
1.				
2.				

Scanned with CamScanner

Unit ⇒ IV

प्रश्न:4. हिन्दी की वर्तमान पाठ्य-पुस्तकों मे कौन-२सी से दोष पाए जाते है? एक आदर्श पाठ्य-पुस्तक की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

\# भूमिका :- पाठ्य-पुस्तके अनुदेशात्मक सामग्री के रूप मे सर्वाधिक प्रयोग की जाती है। पाठ्य-पुस्तकें पाठ्यक्रम की वास्तविक रूपरेखा को प्रस्तुत करती है। शिक्षक तथा छात्र दोनों के लिए पाठ्य-पुस्तकें ही उपयोगी है। पुस्तकों के माध्यम से अतीत का ज्ञान तथा अनुभव संचित किए जाते है। ये अनुभव आने वाली पीढ़ी का मार्गदर्शन करते है अतः "किसी विषय के ज्ञान को जब एक स्थान पर पुस्तक के रूप मे संगठित रूप से प्रस्तुत किया जाता है तो उसे पाठ्य-पुस्तक कहा जाता है।"

बेकन के अनुसार, — "पाठ्य-पुस्तक कक्षा प्रयोग के लिए विशेषज्ञों द्वारा सावधानी से तैयार की जाती है। यह शिक्षण युक्तियों से भी परिपूर्ण होती है।"

डगलस के अनुसार, — "अध्यापकों द्वारा विश्लेषण के पश्चात् पाठ्य-पुस्तकों को वे क्या और किस प्रकार पढ़ाएंगे की आधारशिला माना है।"

Scanned with CamScanner

पाठ्य-पुस्तकों के दोष

यह कथन सत्य है कि हिन्दी शिक्षण में पाठ्य-पुस्तक एक अच्छा सेवक व एक बुरा मालिक होती है। इस कारण इनका उपयोग सीमित ही होना चाहिए। सामान्यतः पाठ्य-पुस्तक के अत्यधिक प्रयोग से निम्न हानियाँ सम्भव है -

(1) पाठ्य-पुस्तकों मे चूंकि पकी-पकाई पाठ्य-सामग्री तर्कपूर्ण ढंग से व्यवस्थित मिल जाती है, इस कारण छात्र स्वचिन्तन नहीं करते है। इन परिस्थितियों मे अध्ययन केवल स्मृति केन्द्रित रह जाता है।

(2) पाठ्य-पुस्तकें सीमित पाठ्य-वस्तु तक ही केन्द्रित रहती है, इस कारण यह विस्तृत व गहन अध्ययन हेतु बहुत कम प्रोत्साहित करती है।

(3) पाठ्य-पुस्तक बहुत जल्द ही पुरानी पड़ जाती है। साहित्य के क्षेत्र मे हुई नवीनतम उपलब्धियों का इनमें पुरन्त ही समावेश नहीं हो पाता है।

(4) पाठ्य-पुस्तके सरकारी शिक्षा विभाग द्वारा तैयार कराई जाए, ये पुस्तकें हर प्रकार से उत्तम होनी चाहिए

(5) पुस्तकों मे वर्ग, जाति, धर्म का स्थान होता है तथा ऐसा नहीं होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

आदर्श पाठ्य-पुस्तकों की विशेषताएँ

अच्छी पाठ्य-पुस्तकों मे मनोवैज्ञानिक तथा तार्किक दो प्रकार की विशेषताएँ होती हैं। पहले हम मनोवैज्ञानिक विशेषताओं का वर्णन करेंगें।

(1) मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ – पाठ्य-पुस्तक की मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ निम्न हैं।—

i. विषय-सामग्री :– पाठ्य-पुस्तको की विषय सामग्री बालक की रूचि, मानसिक योग्यता तथा विकास की अवस्था के अनुसार होनी चाहिए। पाठ्य-सामग्री को स्पष्ट करने के लिए ऐसे उदाहरणो का प्रयोग किया जाए जिससे बालक परिचित हो तथा सरलता से समझ सकें। पाठ्य-सामग्री मे विभिन्नता भी आवश्यक है। इससे मंन्द, सामान्य, तथा प्रखर बुद्धि वाले सभी बालक अपनी-अपनी मानसिक आवश्यकता के अनुसार लाभ प्राप्त करते रहें।

ii. भाषा-शैली :– भाषा शैली भी बालक की रूचि तथा योग्यता और विकास के विभिन्न स्तरों के अनुसार होनी चाहिए। छोटी कक्षा मे छोटे-छोटे, सरल एवं सरस शब्द प्रयोग किए जाए और जैसे-जैसे कक्षा स्तर उपर उठता चला जाता है वैसे ही कठिन भाषा का उपयोग करना चाहिए। पाठ्य

पुस्तको की शैली रुचिकर तथा मनोरंजक होनी चाहिए। इसमे ओज, माधुर्य तथा प्रसार गुणों का समावेश करना चाहिए।

(iii) **चित्रण** :- पाठ्य-पुस्तकों मे आवश्यकतानुसार स्पष्ट, बड़े एवं रंगीन चित्रों, मानचित्रों, रेखाचित्रों तथा तालिकाओं व सारणियों का उचित स्थान पर प्रयोग किया जाना चाहिए। पाठ्य-पुस्तक में उचित स्थानों पर वर्णन करके पाठ्य-पुस्तक को रोचक तथा प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

(iv) **बाह्य रूप** :- किसी भी पाठ्य-पुस्तक का बाह्य रूप अत्यंत प्रभावशाली होना चाहिए। पाठ्य-पुस्तक यदि देखने मे सुंदर लगती है तो वह प्रभावशाली होती है। उसकी बनावट, बाह्य आवरण, मुख पृष्ठ अत्यन्त सुन्दर व रोचक होने चाहिए। इससे बालको मे पाठ्य-पुस्तक को देखकर रुचि तथा जिज्ञासा उत्पन्न होती है। यह ध्यान रखना जरूरी है कि छोटी कक्षाओं की पाठ्य-पुस्तको का आवरण रंगीन, चमकदार तथा चिकना होना चाहिए और बड़ी कक्षाओ की पुस्तकों को कलापूर्ण तथा सात्विक होना चाहिए। पुस्तक की जिल्द मजबूत होनी चाहिए कागज अनुकूल तथा उचित होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

(v) फॉर्मैट :- पाठ्य-पुस्तक फॉर्मैट मे छोटे-बड़े शीर्षक की व्यवस्था, टाइपिंग तथा हाशिया और संकेत चित्रों सहित उपस्थित होने चाहिए। उपरोक्त सभी बातें किसी भी पाठ्य-पुस्तक को उचित स्थान प्रदान करती है। ये सभी बातें पाठ्य-पुस्तक की उपयोगिता को बढाती है। अतः प्रत्येक स्तर के विद्यार्थी के लिए पाठ्य-पुस्तक लिखते समय लेखक तथा प्रकाशकों को इन सभी बातों का ध्यान रखना आवश्यक है।

(2) तार्किक विशेषताएँ :- पाठ्य-पुस्तक की तार्किक विशेषताएँ निम्न होती है।

i. संगठन तथा व्यवस्था :- पाठ्य-पुस्तकों की विषय-सामग्री को तर्कपूर्ण तरीके से सुसंगठित तथा सुव्यवस्थित करना चाहिए। ऐसा होने से पाठ्य-पुस्तक को पढाने मे सरलता रहती है। पाठ्य-पुस्तक सरलता से पढायी जा सकती है। पाठ्य-सामग्री के छोटे-छोटे पाठो की घटनाओं को आवश्यक शीर्षको सहित उचित स्थानों पर सरलता से रोचक एवं प्रभावपूर्ण बनाया जा सकता है। पाठ्य-पुस्तक में आवश्यक शीर्षको को उचित स्थान पर प्रयोग करना चाहिए। पाठ्य-पुस्तक के निर्माण मे संगठन और व्यवस्था का होना अनिवार्य है।

Scanned with CamScanner

(ii) विश्वसनीयता :- पाठ्य-पुस्तक को विश्वसनीय बनाने के लिए उसमे मौलिक विचार, निष्पक्ष तथा स्पष्ट होने चाहिए। पाठ्य-पुस्तक मे आँकड़े और उदाहरण भी वैध होने चाहिए। पाठ्य-सामग्री की नवीनता तथा वास्तविकता विश्वसनीय सन्दर्भों द्वारा प्रमाणित होनी चाहिए। किसी भी पाठ्य-पुस्तक को वैधता देने मे उसकी निष्पक्षता और स्पष्टता अनिवार्य होती है।

(iii) विषय का प्रतिपादन :- पाठ्य-पुस्तक में आधुनिक सूचनाएँ होनी अनिवार्य हैं। विषय का प्रतिपादन भी निश्चित ठोस तथा सुसंगठित होना चाहिए। पाठ्य-पुस्तक के निर्माण मे प्राचीनता ठोस तथा समावेश ना होकर आधुनिकता का होना जरूरी होता है। कोई भी पाठ्य-पुस्तक आधुनिक विचारों से परिपूर्ण होना चाहिए।

(iv) शिक्षण में सहायक :- पाठ्य-पुस्तक में बालकों तथा शिक्षकों के नए निश्चित उद्देश्यों का होना चाहिए। लेखक की भूमिका में शिक्षकों के लिए अध्यापन संबंधी आवश्यक सूचनाएँ देकर पुस्तक के आरंभ मे विषय-सूची तथा अंत मे अनुक्रमणिका का भी व्यवस्था करनी चाहिए।

Scanned with CamScanner

Unit → III

प्रश्न: 5 अनुवाद से आपका क्या अभिप्राय है? भाषा अध्यापक के रूप में अपनी कक्षा में अनुवाद की शिक्षा देते समय किन-किन बातों का ध्यान रखेंगे?

अनुवाद का अर्थ :- अनुवाद एक कला है। जिससे भाषा का संचार होता है। जिसमे एक भाषा को दूसरी भाषा मे बदला जाता है। अनुवादकर्ता जिस भाषा का अनुवाद करता है वह पहली भाषा के वास्तविक अर्थ के अनुसार ही होना चाहिए। अनुवाद को अंग्रेजी मे ट्रांसलेशन कहते हैं।

अनुवाद करने के लिए पहले विषय के अनुरूप अपना दृष्टिकोण बनाना चाहिए। इसके बाद भी विषय-वस्तु के अनुवाद के लिए बहुत अधिक सावधानियाँ बरतनी होती है। मूल सबसे कृति और अनुवाद कृति के अर्थ समान होना चाहिए।

केवल अनुवाद का अन्तर्भाषीयट प्रक्रिया नहीं है। अनुवाद विभिन्न भूमिकाओ के लिए कई तरह के एक एकीकृत या नए शब्दो का निर्माण है किन्तु यह भी सबसे महत्वपूर्ण बात है कि हम अपने शब्द, वाक्य किसी दूसरे भाषाकर्ता को समझाने के लिए अनुवाद की सहायता लेते हैं।

Scanned with CamScanner

अनुवाद की शिक्षा देते समय निम्न बातों का ध्यान देना आवश्यक है जो इस प्रकार हैं।

1. शब्दों एवं वाक्य की रचना सही प्रकार से की गई हो।
2. पर्याप्त विषय-वस्तु हो जो उसकी मूल रचना के अनुसार हो।
3. अनुवाद भाषा या विषय-वस्तु का अर्थ उसकी वास्तविक भाषा के अनुसार होना चाहिए।
4. अनुवाद भी वही छाप छोड़े जो वास्तविक रचना की पहचान हो
5. अनुवाद विषय मे सन्धि-विच्छेद का स्थान सही होना चाहिए।
6. अनुवाद ऐसा हो जिसे पाठक सुगमता से समझ सकें।
7. अनुवादकर्ता की सही अभिव्यक्ति का प्रदर्शन हो।
8. अनुवादकर्ता को अपने विषय-वस्तु का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए।
9. अनुवादकर्ता के अनुवाद करते समय सरल व सुगम भाषा का उपयोग करना चाहिए।
10. अनुवादकर्ता को शब्द के एक-एक वाक्य का अनुवाद का अनुवाद करना चाहिए।

Scanned with CamScanner

अनुवाद शिक्षण की विधियाँ

अनुवाद - शिक्षण की मुख्यतः तीन प्रमुख विधियाँ हैं—
(1) पुस्तक विधी
(2) दुभाषिया विधी
(3) तुलना एवं अनुकरण विधी

i) पुस्तक विधी :- वर्तमान समय में विद्यालयों में अनुवाद - शिक्षण पुस्तक प्रणाली द्वारा ही कराया जाता है। अनुवाद-शिक्षण हेतू विशिष्ट पुस्तके तैयार की गई हैं, जिनमें अनुवाद के नियम तथा आदर्श अनुवाद दिए जाते हैं। इनमें वाक्य व्याकरण की दृष्टि से क्रमबद्ध रखे जाते हैं। छात्रों को क्रम से एक-एक वाक्य का अनुवाद करना सिखाया जाता है। इसके पश्चात् कारकों का समुचित प्रयोग करके अनुवाद करना सीख जाते हैं, तब छात्रों को मिश्रित वाक्यों एवं गद्य - खण्डों को अनुवाद करने को कहा जाता है। इन पुस्तकों के अंत में अभ्यास प्रश्न दिए होते हैं।

(ii) दुभाषिया विधी :- इस प्रणाली में एक छात्र किसी एक भाषा में बोलता है और शिक्षक हिन्दी में उसका अनुवाद करता चलता है। यह प्रणाली तब उपयोगी हो सकती है, जब छात्र अनुवाद करना सीख जाए।

iii तुलना एवं अनुकरण विधी :- इस प्रणाली मे शिक्षक किसी अन्य भाषा के कुछ वाक्यों का हिंदी भाषा मे आदर्श अनुवाद छात्रो के समक्ष प्रस्तुत करता है। छात्र आदर्श अनुवाद का निरीक्षण एवं तुलना करते है और सामान्य नियमों की समझने का प्रयास करते है। पश्चात अनुकरण करके अनुवाद करना सीखते है। इसी प्रकार छात्रो की आदर्श अनुवाद सदृश हिन्दी भाषा के कुछ वाक्य दिए जाते है और छात्रों को अन्य किसी भाषा में अनुवाद करने को कहा जाता है।

निष्कर्ष :- निष्कर्षत: हम कह सकते है कि आज का व्यापार एक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप ले चुका है। शिक्षा का भी निजिकरण हो चुका है। लाभ की दृष्टि से अपने साहित्य को दूसरो तक पहुँचाने के लिए हम अनुवाद की सहायता लेते है। आज अनुवाद राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय दोनो स्तर पर अनुवाद का उपयोग किया जाता है आज संस्कृति, साहित्य, संविधान, सब जगह अनुवाद का उपयोग किया जाता है।

Scanned with CamScanner